CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

परम्परागत कौशल आधारित कार्यो का आर्थिक दृष्टि से अध्ययन

रेखा शर्मा
सहायक आचार्य
सम्बल कॉलेज ऑफ एज्युकेशन
नवलगढ़ रोड़, शिवसिंहपुरा, सीकर
Email-rekha7aug87@gmail.com, Mobile-8107077846

First draft received: 22.11.2023, Reviewed: 27.11.2023, Accepted: 22.12.2023, Final proof received: 28.12.2023

सार-संक्षेप

आज के वर्तमान वैज्ञानिक युग में बालकों की रूचियाँ अपने किए जाने वाले कार्यों के प्रति बदली है। जहाँ पहले घर के सारे बालक अपने परम्परागत कार्यों में लग जाते थे वहीं आज हर कोई अपनी रूचि के अनुसार कार्यों को चुनता है। जैसे पहले कृषि का कार्य करने वाले परिवार में सारे कृषि से ही जुड़े रहते थे, लेकिन आज कोई नौकरी कर रहा है या अन्य कोई कार्य।

मुख्य शब्द : *परम्परागत कार्य, परम्परागत कौशल, पारंपरिक प्रौद्योगिकी आदि,*

प्रस्तावना

कुछ बालकों को उनके माता-पिता जन्म से ही अपने परम्परागत कार्यों में लगा देते हैं जिससे उनकी रूचि उन परम्परागत कार्यों के प्रति स्वतः ही हो जाती है। उन्हें फिर किसी अन्य कार्य में रूचि नहीं होती है। पीढ़ी दर पीढ़ी माता-पिता अपने बच्चों को परम्परागत कार्यों में लगाये रखते हैं।

बीकानेर जिले में अनेक पारम्परिक कौशलों का निर्वहन किया जा रहा है परन्तु यह कार्य बालकों के शैक्षिक एवं आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति नहीं कर पा रहे है व इनका पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तातंरण भी नहीं हो पा रहा है अतः शोधकर्त्री ने इस और इन कार्यों की पारम्परिकता बनाये रखने उपयुक्त समस्या को चुना।

आज के वर्तमान वैज्ञानिक युग में बालकों की रूचियाँ अपने किए जाने वाले कार्यों के प्रति बदली है। जहाँ पहले घर के सारे बालक अपने परम्परागत कार्यों में लग जाते थे वहीं आज हर कोई अपनी रूचि के अनुसार कार्यों को चुनता है। जैसे पहले कृषि का कार्य करने वाले परिवार में सारे कृषि से ही जुड़े रहते थे, लेकिन आज कोई नौकरी कर रहा है या अन्य कोई कार्य।

मेरे इस शोध द्वारा पारम्परिक ग्रामीण प्रौद्योगिकी को विद्यालयों की सहायता व शिक्षा की सहायता से सामने लाना व परम्परागत कौशलों को उत्पन्न किया जा सकेगा। ऐसी प्रौद्योगिकी को नवाचारी कहा जाता है जिन्हें नया नया डिजाइन किया गया है और जिनकी व्यवहार्यता हेतु जाँच की गई है लेकिन जिन्हें न तो केन्द्र और राज्य सरकार की विस्तारण एजेंसियों द्वारा बढावा दिया जा रहा है और न ही बैंक। सँस्थागत वित्तीयन हेतु पात्रता के लिए अभी वाणिज्यिक बनाया गया है। तथापि पारंपरिक प्रौद्योगिकी के संदर्भ में इस नियम में छूट दी गई है जो यद्यपि सगंत है, लेकिन सरकारी सँस्थाओं से पर्याप्त सहयोग और समर्थन की कमी के कारण उपयोग नहीं की जा रही है।

अध्ययन का महत्व

परम्परागत कौशलों से ही बालक का समुचित शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास हो सकता है। परम्परागत कौशल अपने प्रभावों से बालक का सफल मार्गदर्शन करते है।

कौशल बालक की अन्तर्निहित प्राप्तियों तथा ऊर्जा को अभिव्यक्त करते है। प्रत्येक बालक में अनन्त शक्ति छिपी होती है। उसमें धधकती ऊर्जा के असंख्य स्त्रोत विधमान है।

शोधकर्त्री द्वारा बीकानेर जिले के क्षेत्र में ग्रामीणों की स्थिति जो कि नाजुक नजर आती है इस हेतु आवश्यकता महसूस की कि इस क्षेत्र को किस तरीके से महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है और आर्थिक स्थिति से मजबूत किया जा सकता है। इसी आवश्यकता को महसूस करते हुए शोधकर्त्री ने परम्परागत उद्योग व कार्यां को शिक्षा के साथ-साथ विद्यालयों में कैसे करवाया जा सकता है, को लिया एवं पारम्परिक कार्यों को चुनते हुए कार्य किया।

अध्ययन का औचित्य

परम्परागत कौशल आधारित उद्योगों के प्रति रूचि के क्षेत्र में वैज्ञानिक अध्ययनों का अभाव रहा है, क्योंकि शायद इन क्षेत्रों को अधिक महत्वपूर्ण नहीं समझा गया, साथ ही इनका अध्ययन एवं मापन कठिन कार्य है, परन्तु आधुनिक युग में इस दिशा में वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता महसूस की जा रही है, इसलिए उस क्षेत्र में अध्ययन करने में शोधकर्त्री द्वारा किया गया प्रयास उपयोगी एवं औचित्यपूर्ण सिद्ध होगा।

इस समस्या से संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन जैसे- फिलिप्स (2001) ने ''व्यावसायिक रूचियों एवं व्यावसायिक पसन्दों का अध्ययन'', गुप्ता तथा मिश्रा (2008) ने - ''परास्नातक स्तर पर अकादमिक तथा व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर रही छात्राओं के आत्म-बोध का तुलनात्मक अध्ययन'' तथा सिंह, विजेन्द्र (2015-16) ने ''स्थानीय परिवेश में प्रचलित परम्परागत कौशल आधारित कार्यों के शैक्षिक एवं आर्थिक निहितार्थ'' से ज्ञात हुआ कि ''परम्परागत कौशल आधारित उद्योगों का शैक्षिक एवं आर्थिक दृष्टि से अध्ययन'' विषय पर शोधकार्य आज तक नहीं किया गया है। अतः इस विषय पर शोधकार्य पर्याप्त औचित्यपूर्ण एवं वांछनीय है। इस विषय के इसी औचित्य को ध्यान में रखकर शोधकर्ता ने उपर्युक्त विषय को शोधकार्य हेतु चयनित किया।

समस्या कथन

परम्परागत कौशल आधारित कार्यों का आर्थिक दृष्टि से अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य

- परम्परागत कौशल आधारित कार्यों का आर्थिक दृष्टि से अध्ययन करना।

परिसीमन

- प्रस्तुत शोध स्थानीय परिवेश में प्रचलित परम्परागत कौशल आधारित कार्यों की सूची तैयार करने हेतु बीकानेर जिले तक सीमित रखा गया है।
- स्थानीय परिवेश में प्रचलित परम्परागत कौशल आधारित कार्यों में से पांच कौशल **1. पापड़ निर्माण कौशल, 2. बड़ी निर्माण कौशल, 3. दरी निर्माण कौशल, 4. बूंदी/बंधेज निर्माण कौशल एवं 5. थाल पोश कौशल** पर प्रायोगिक कार्य किया गया है।

शोधविधि

प्रस्तुत अध्ययन ''परम्परागत कौशल आधारित उद्योगों का शैक्षिक एवं आर्थिक दृष्टि से अध्ययन'' में अनुसंधान की विधि के रूप में शोधकर्त्री ने सर्वेक्षण विधि, प्रायोगिक विधि एवं विवरणात्मक विधि का प्रयोग किया है।

शोधकर्त्री ने स्थानीय परिवेश में प्रचलित परम्परागत कौशल आधारित कार्यों के शैक्षिक निहितार्थ हेतु चुने गए निम्नलिखित पांच कौशल यथा - 1. दरी निर्माण कौशल, 2. पापड़ निर्माण कौशल, 3. बूंदी/बर्धेज कौशल, 4. बड़ी कौशल एवं 5. थाल पोश निर्माण कौशल पर प्रत्येक कौशल में पूर्व व पश्च परख में पांच-पांच प्रश्नों का निर्माण कर शैक्षिक स्तर को ज्ञात करने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष निरूपण

परम्परागत कौशल आधारित उद्योगों के आर्थिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने अवलोकन एवं पूछताछ का माध्यम अपनाया। शोधार्थी ने यह पाया कि इन तमाम परम्परागत कौशल आधारित उद्योगों में अनुपयोग वस्तुओं से भी उपयोगी वस्तुओं का निर्माण किया जा सकता है जो कि बहुत कम कीमत पर बनाई जा सकती है, जिनमें से चिन्हित कौशलों का वर्णन एवं उनकी आर्थिक उपादेयता दर्शायी गई हैं एवं सार्थकता को दर्शायी गई है।

हिन्दी संदर्भ साहित्य

1. भार्गव, महेश 1982. आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन. हरप्रसाद भार्गव. आगरा
2. रायजादा, बी.एस. 1997. शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व. राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी. जयपुर
3. राय. उदयनारायण. 2006. भारतीय कला, लोक भारती प्रकाशन. इलाहाबाद
4. वैद्य. नरेन्द्र. 1976 एच.पब्लिसिंग कम्पनी, नई दिल्ली, बोम्बे, कलकत्ता
5. शुक्ला एवं सहाय. 1982. सांख्यिकी के सिद्धान्त. साहित्य भवन. आगरा
6. शुक्ल, प्रयाग 2007. आज की कला, राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद
7. श्रीवास्तव. डी.एन. एवं वर्मा. प्रीति 2001 मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी विनोद पुस्तक मन्दिर. आगरा